International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 04(I), October - December, 2023, pp. 91-94

प्रकृति से संवाद करती नायिकाएँ

प्रो. बीना जैन*
श्रेया शर्मा**

सार

प्रगैतिहासिक काल में आदि मानव की जागती जिज्ञासाओं को शांत करने का एक मात्र साधन प्रकृति था। उसने अपने परिवेश से अनेक प्रकार के अनुभवों को प्राप्त किया। कला तथा प्रकृति के समन्वय से अपनी जिज्ञासा को शांत किया एवं अभिव्यक्ति का साधन समझा। इसी भावनात्मय आवश्यकता का स्वरूप हैं 'कला' जिसके द्वारा वह अपने जीवन को सुचारु रूप से चलाने, समझने तथा प्रकृति से संवाद करना चाहा। इसी क्रम में प्राकृतिक सौंदर्य से प्रभावित होकर ही एक श्रेष्ठ कलाकार कैनवास पर अपनी कला का चमत्कार दिखाने को विवश हो जाता हैं। इस कारण हम देखते हैं की एक कुशल कलाकार और कवि प्राकृत सौंदर्य में तल्लीन दिखाई देते हैं। क्योंकि नगर की की कृत्रिम शोभा में वो आनंद कहां जो नैसर्गिक सौन्दर्य में मिलता हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य में अत्यधिक रमणीयता पाए जाने के कारण ही हम देखते, हैं कि प्रगैतिहासिक काल से ही कलाकार ने सागर कि लहरें, बहती पवने, उड़ते पंछी तथा ऋतु श्रृंगार को कैनवास पर उतारना अपना पहला धर्म समझा। कारण यह हैं कि जिस चीज के हम जितना समीप रहते हैं, उसी से हम अधिक परिचित होते हैं। और वह वस्तु हमें उतनी ही स्वाभाविक प्रतीत होतीं हैं। अतः यही कारण हैं कि कलात्मक कृतियों में प्रकृति –स्वरूपों का अनुकरण निहित होता हैं।

शब्दकोशः *प्रकृति, नायिका, परिवेश, मनुष्य, नायक।*

प्रस्तावना

भारतीय कला में प्रकृति को सिर्फ एक परिवेश न मानकर उसे सदैव एक देवीय स्वरूप तथा एक आत्मा के रूप में देखा है जिससे वह कला आदि माध्यमों के द्वारा अपनी देवी को समझना तथा उससे वार्ता करना। चाहता रहा है। यही कारण है कि हमें भारतीय कलाकार की कला को जानने से पूर्व उसे कुछ इस प्रकार देखना होगा कि काला एक जीव है। कला में जीवन बसता है जिसकी अपनी एक आत्मा है और उस आत्मा की अपनी एक अभिव्यक्ति तथा परम्पराएं है तभी हम उस कला को समझ सकेंगे1 चाहे जो कोई भी हो, अंततः सभी कलाएं चित्रकला, मूर्तिकला, काव्य कला हो या साहित्य सभी परस्पर प्रकृति से अतः संबंध रखते हैं2 इसके अतिरिक्त कलाकार प्राचीन समय से ही काव्य को आधार मानकर चित्र रचना करता आया है। जेन, अपभ्रंश, राजस्थानी, मुगल और पहाड़ी कलाकारों के प्रेरणा स्रोत साहित्य व धर्म के ग्रंथ रहे हैं। रीतिकालीन तथा भक्तिकालीन ग्रंथों का तो बहुलता से चित्रण हुआ है 3।

* शोध निर्देशिका, चित्रकला विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** शोधार्थी, चित्रकला विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

भारतीय लघु चित्रकला का विषय काफी विस्तृत रहा है। विभिन्न प्रकार की राग रागिनियों हिंडोल, मेघ, भैरव तथा विभिन्न प्रकार की नायिकाओं का काफी मात्रा में चित्रण हुआ है। इससे अलावा स्थानीय परिवेश तथा शासकों की रुचि का भी चित्रों के विषय पर काफी प्रभाव पड़ा। यहाँ का शासक वर्ग जितना युद्ध में जूझा, उतना ही वे भोग विलास तथा रसिकता में भी रहते राजाधि राजाओं की इसी शुद्ध को स्थानीय चित्रकारों तथा कवियों ने काफी हद तक से मिटाने का प्रयास किया था। तब वह काफी हद तक इसमें सफल भी हुआ।

केशव ने कविता दी तो चित्रकारों ने उसे चित्रों में बांध दिया। इसी क्रम में नायिकाभेद पर पर्याप्त मात्रा में चित्रण हुआ। कलाकारों ने इन क्षेत्रों की पृष्ठभूमि में प्रकृति में फैले अन्य साधनों के उपयोग से पृष्ठभूमि को संजोया 4। कलाकारों ने प्रकृति का चित्रण आलंकारिक स्वरूप के साथ प्रतीकात्मक रूप से परिस्थिति के अनुसार किया। जैसे यदि चित्रकार ने वि रोहित कण चिता को चित्रित किया है तो उसने उसे बिलौं वृक्ष के नीचे खड़ा दिखाया है और वातावरण को शुष्क रूप में अंकित किया है। यदि नहीं का मुदितावस्था में चिंतित हैं तो उसके साथ सारस के जोड़े। टपकती हमारी तथा तेज बहती नदियों के साथ फलों से लदे वृक्षों को भी दर्शाया है। केशव की रसिकप्रिया जिसे काव्य को अधिक परिणाम में उकेरा गया है।

नायिका भेद सौंदर्य की अभिव्यक्ति ही कला का उद्देश्य होता है,नारी को सौंदर्य अभिव्यक्ति का माध्यम माना गया है। नाट्य काव्य तथा काम शास्त्रोंके ग्रंथकारों ने नारी के विभिन्न स्वरूप, स्वभाव, व्यवस्था तथा मनोदशा का बहुलता से वर्णन किया है। इस अध्ययन को ही नायिकाभेद कहा जाता है 5

भानुदत्त ने नायिकाओं को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया है। अर्थात स्वकीया पर किया तथा सामान्य 6

केशवदास ने नायिकाओं को मनोदशा तथा स्थिति के अनुसार आठ भागों में वर्गीकृत किया है। स्वाधीनपतिका उत्कंठिता वासकसज्जा अभिसन्धिता खंडिता, प्रोषितपतिका विप्रलब्धा और अभिसारिका 6।

कामशास्त्र में गुणों के अनुसार पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी तथा हस्तिनी का उल्लेख मिलता है। अवस्था के अनुसार नायिकाओं को मुग्धा, मध्या तथा प्रोढा में वर्गीकृत किया गया है 7।

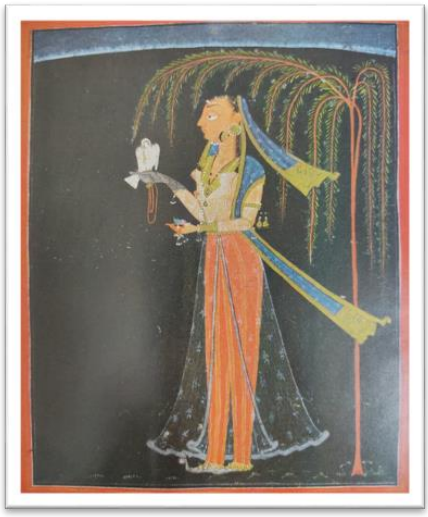

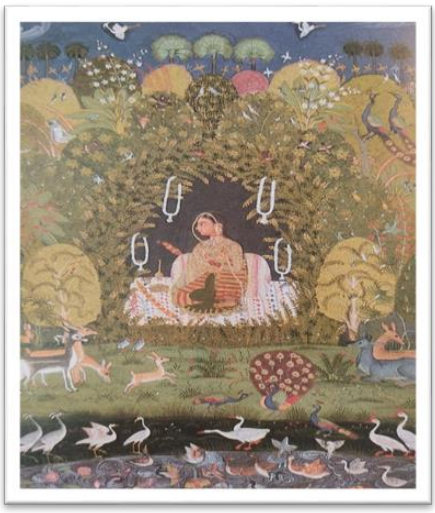

चित्र संख्या 1. बसोहली चित्रशैली की उत्कृष्ट कृति है, चित्र में चित्रित नायिका विरहणी नायिका है जो कि एक विलो पेड़ की छाया के नीचे खड़ी होकर अपने प्रियतम की याद में मग्न दिखाई है। विलो वृक्ष आम तौर पर मनुष्य की भावनाओं तथा लहार की पीड़ा का प्रतीक है? चित्रित नायिका अपने दाहिने हाथ में बांज पकड़े गए हैं, जिससे वो और अधिक आकर्षक दिखती है। संभव है। यह चित्र राजा कृपाल पाल के शासनकाल में चित्रित किया गया था 8।

चित्र संख्या 2. लगभग १७०० ई. मे बूंदी शैली में "वासक सज्जा" नामक शीर्षक चित्र में प्राकतिक छटा का सौंदर्य पूर्ण अंकन हुआ है । चित्रकार ने चित्र में राधा को वासक सज्जा नायिका के रूप में नायक की प्रतीक्षा के रूप में चित्रित किया है । प्रस्तुत चित्र में राधा अपने नायक श्री कृष्ण की प्रतीक्षा में निकुंज को निहार रही है जिससे पास रखे इत्र दान की ओर उसका ध्यान ही नही गया । पक्षियों का कलरव, हरिणों की उछल कूद, नृत्य करते मयूर को देखकर राधा का मन भी कृष्ण की प्रतीक्षा में झूम रहा है । चन्दन के वृक्षों के उपर कोमल पत्तों से युक्त सुन्दर लताये लिपटी है उन्हीं के बीच राधा छिपी है । रसिकप्रिया के कवित्त को बूंदी के चित्रकार ने बड़े ही सुन्दर रूप में प्रस्तुत किया है 9।

चित्र संख्या 3. प्रस्तु चित्र मोला राम। द्वारा चित्रित विप्रलब्धा। नायिका का है।लगभग। मैं श्रीनगर गढ़वाल में मोला राम की प्रतियों में से एक है। चित्रों में चित्रकार मूलाराम का नाम तथा विप्रलब्धा नायिका का वर्णन करने वाला श्लोक अंकित है। क्षेत्र में नायिका को आम के पेड़ के नीचे खड़ी है। दिखाया गया है। जो अपने प्रेमी की प्रतीक्षा कर रही है उसे सामने गुलाबी फूलों वाला। मंदार का पेड़ है जो उसकी सारी व्यथा देख रहा है। उसने अपनी गहने। उतारकर दूर फेंक दिए क्योंकि जब उसका प्रेमी ही उसे देखने नहीं आया तो श्रृंगार किस काम का है। नायिका अपने वियोग की वेदना प्रकृति से साझा कर रही है 10।

चित्र संख्या 4.यह उक्ता नायिका का चित्र है जो एक पेड़ की शाखा को पकड़े हुए खड़ी है । तथा अपने प्रेमी का इंतजार कर रही है, नायिका के बाई ओर एक कमल सरोवर को चित्रित किया गया है। नायिका के मुख पर चिंता के भाव व्यक्त है। उसकी चिंता इस बात पर बड़ गयी है की उसका प्रेमी तय समय पर नही आता है। अँधेरी रात मे नायिका को नीले ओर लाल में लिपटी हुई मंत्र मुग्ध चित्रित किया गया है । प्रस्तुत चित्र चम्बा शैली का है। जबकी चित्र में कलाकार ने बसोहली शैली के पसंदीदा गहरे लाल ओर नीले रंग का उपयोग है । नायिका की आकृति में काँगड़ा शैली की कोमलता तथा सुंदरता को चित्रित किया है11 ।

निष्कर्ष

कलाओं के सर्जन तथा उत्पत्ति के विषय में अगर हम विचार करें कि इसके पीछे किन तत्वों का योग हो सकता है? तो हम पाते हैं की प्रकृति ही वह आदर्श थी जिसने कलाओं को जन्म दिया। आदिमानव केवल दृश्य जगत से ही भिज्ञ था। उसे प्रकृति के विविध स्वरूपों से ही सौंदर्य बोध हुआ। प्रारंभिक मनुष्य ने प्रकृति से संघर्ष करते हुए शक्ति स्वरूप मान लिया गया। तथा प्रकृति का आह्वान किया कि वे उसके जीवन को सुंदर

बनाए। प्रकृति को पृष्ठभूमि में अंकित करने का मुख्य कारण इसे उद्दीपन रूप में प्रस्तुत करना था। उद्दीपन अर्थार्थ भाव जागृत करना भावों को अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए नायक नायिका के साथ प्रकृति को भी उसी भाव में चित्रित किया गया है। नायिकाभेद में प्रकृति का व्यवहार उसके भाव को अधिक मजबूत बनाता है। विरहिणी नायिका के साथ वृक्ष भी दुख से झुक गया है। पशु पक्षी बी दुखी चित्रित किये गए तथा नायिका को सांत्वना देते हुए बताया गया है। मन की विकलता को जल की उठती गिरती रेखाओं से अंकित किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Randhava. M.S. Kangra valley painting, ministry of information and broadcasting, government of india, new delhi,1954, p.n. 13
2. ''आकृति'' सितम्बर, 2018 पृ.सं. 28
3. नीरज, जयसिंह, ''राजस्थानी चित्रकला'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2015, पृ. सं. 7
4. गोस्वामी, प्रेमचन्द्र ''राजस्थान की लघुचित्र शैलियां'' राजस्थान ललित कला अकादमी, 1972, पृ.सं. 72–73
5. अग्रवाल, आर. ए. ''भारतीय चित्रकला का विवेचन'' इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, पृ.सं.230–233
6. Balide, bach, ''Indian love paintings'', lustre press pvt ltd Varanasi, new delhi, 1985, P.N 49
7. Harshav V. Dehejia, ''Rasikapriya'', D. K. Printworld PVT. LTD. 2013, P.N. 79
8. साखलकर, र. वि. ''कला कोश'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2019 पृ. सं. 218
9. Randhava. M.S. Basohli Painting, ministry of information and broadcasting, government of india, new delhi,1959, p.n. 106
10. ministry of information and broadcasting, government of india, new delhi,1954, p.n. 13
11. व्यास, चिन्तामणि, ''रसिकप्रिया'', पं. विश्वनाथ शर्मा झांसी गीता पब्लिशर्स, 1988, पृ.सं. 64
12. रानी सरोज, ''पहाडी चित्रकला का अनुशीलनश्श बी.एच.यू. वाराणसी. पृ.सं.162
13. Lal Mukandi, ''Garhwal Painting'' , ministry of information and broadcasting, government of india, new delhi 1982, P.N. 78.

❖◆❖